छिपकली की शिकायत

बाली की लोककथा

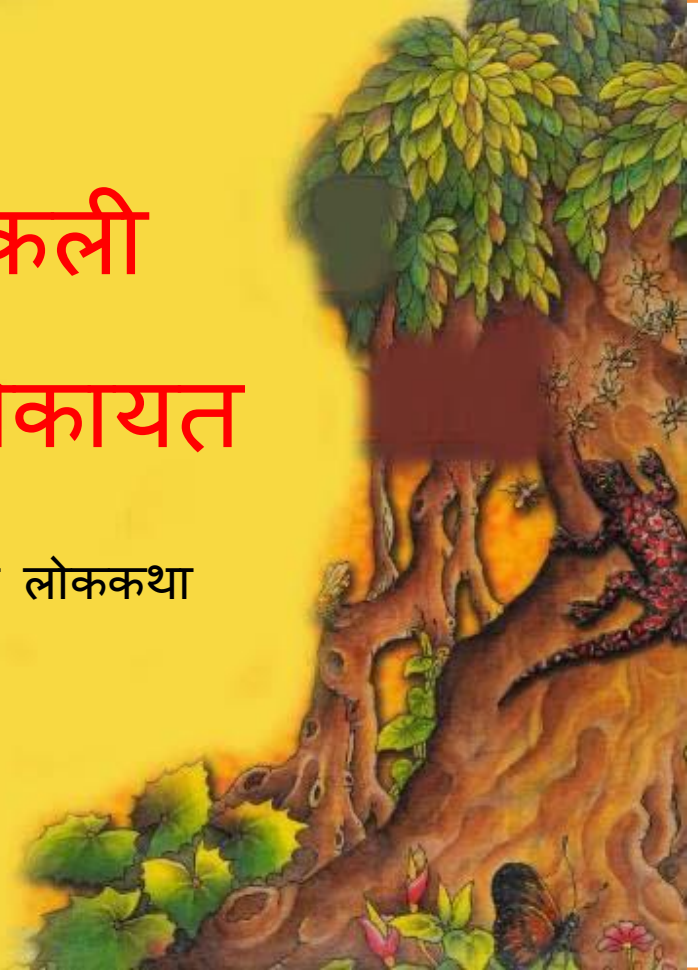

एक द्वीप के घने जंगल में किसी समय एक विशाल छिपकली रहती थी. इस द्वीप को हम आजकल बाली नाम से जानते हैं, उस जंगल में इतने अधिक कीट थे कि अपना खाना तलाश करने के लिए उस छिपकली को कहीं जाना न पड़ता था. जब उसके वट वृक्ष के पास कोई कीट गुनगुनाता हुआ आता तो वह अपनी लंबी, चिपचिपी जीभ बाहर निकालती और उसे पकड़ लेती.

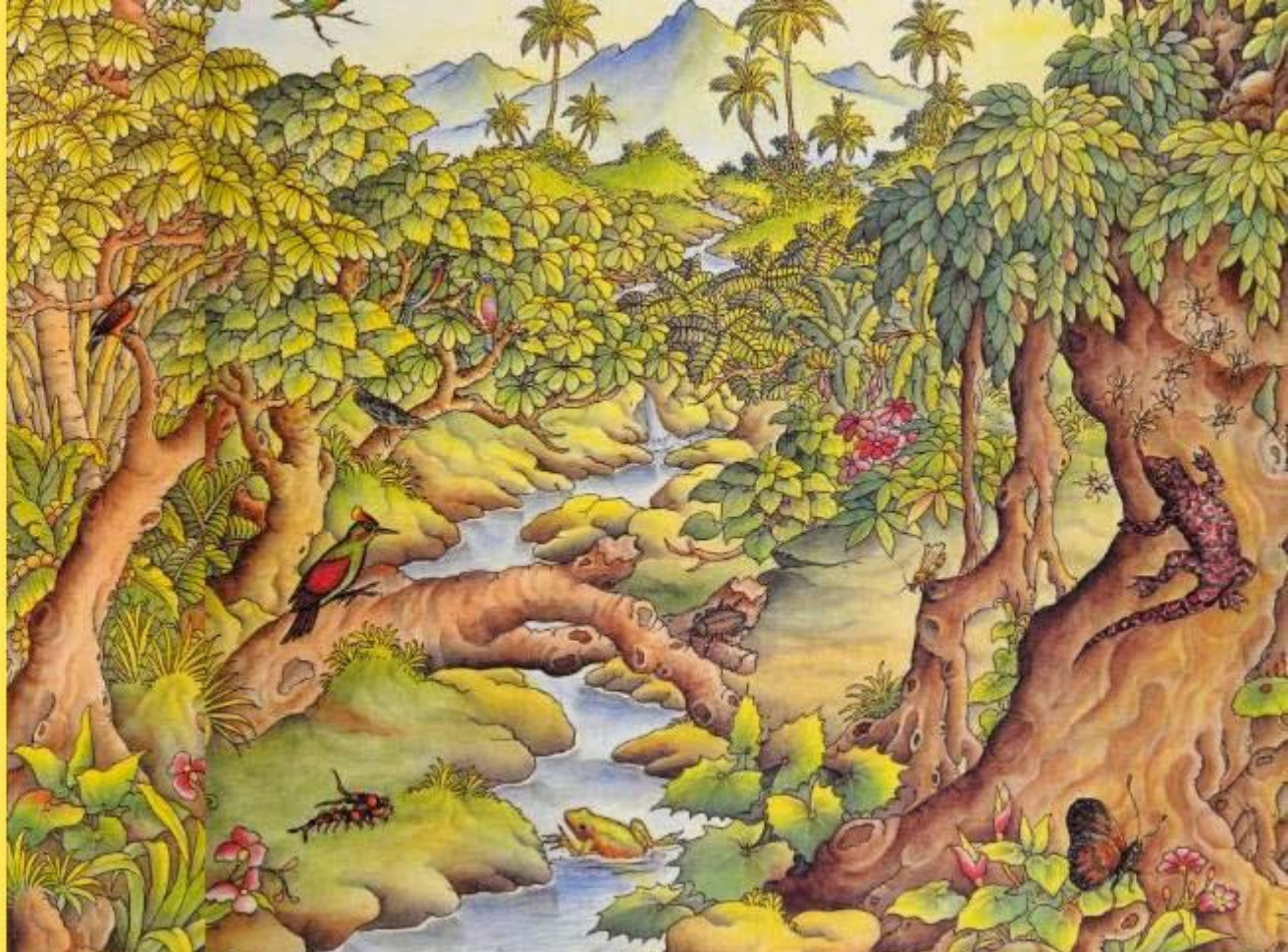

छिपकली वह सब काम कर सकती थी जिन्हें करने की दूसरे जानवर सिर्फ कामना कर सकते थे. अपने पंजों पर लगे नन्हें खूँटों की सहायता से वह पेड़ों पर चढ़ सकती थी, डालियों पर भाग सकती थी. अगर वह अपनी पूंछ गंवा बैठती तो उसकी नई पूंछ निकल आती थी जो पहली से अधिक मज़बूत होती थी. रात में उसे जंगल में घूमना अच्छा लगता था. उसकी ऊंची पुकार, 'गेको...गेको...' जंगल में सोये हुए जानवरों को जगा देती थी. सब उसे छिछोरा, खुदगर्ज़ प्राणी समझते थे.

लेकिन छिपकली के पास इस तरह चिल्लाने के अपने कारण थे. कभी-कभी हुदहुद सारी रात उसके पेड़ पर चोंच मारता और उसे जगाये रखता. कभी-कभी, जैसे ही उसे नींद आती, बड़ी संख्या में जुगनू उसके निकट इकट्ठे हो जाते. वह उसके आसपास उड़ने लगते और संध्या के आकाश को अपनी रोशनी से प्रकाशित कर देते, उनके लाल और पीले शरीर, आग की चिंगारियों समान लगते.

एक शाम छिपकली के वट वृक्ष के पास जुगनू इकट्ठे होने लगे. पहले एक जुगनू जगमगाया. फिर बाकी जुगनू एक साथ जगमगाने लगे और जंगल में दूर-दूर तक प्रकाश की लहरें चमकने लगीं. प्रकाश की किरणें इतनी चमकीली थीं कि रात दिन में बदल सी गई. घंटे पर घंटे बीतते रहे और जुगनू जगमगाते रहे. आखिरकार छिपकली के लिए सहन करना कठिन हो गया. “गेको...गेको!” वह चिल्लाने लगी और वनराज से शिकायत करने के लिए धीरे-धीरे पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगी.

“कोई महत्वपूर्ण बात होनी चाहिए!” वनराज ने बिस्तर से उठते हुए कहा. “आधी रात का समय है.”

“ओह, बहुत महत्वपूर्ण है, महाराज,” छिपकली ने झटपट कहा. “मैं सो नहीं पा रही! जुगनू लगातार जगमगा रहे हैं.”

वनराज मुस्कराया. “अरे, हम दोनों की एक ही समस्या है. जुगनू तुम्हें परेशान कर रहे हैं और तुम मुझे परेशान कर रही हो.”

“जी हाँ,” छिपकली ने लज्जित महसूस करते हुए कहा. “मैं शिकायत नहीं करती, महाराज, पर मैं सच में बिलकुल नहीं सो पा रही!”

“मैं इसकी जांच करूंगा,” वनराज ने आश्वासन दिया.

अगले दिन बहुत सुबह वनराज जुगनुओं के पास आया और पूछा, “तुम दूसरों को परेशान क्यों करते हो? हमारे जंगल में रात के समय सब शांत और चुप रहते हैं.”

जुगनू विनम्रता से बोले, “हम चमक कर किसी को कष्ट नहीं देना चाहते. हुदहुद पेड़ पर ठोकर मार कर रात भर चेतावनी का संकेत दे रहा था. हम तो बस उसका संदेश सब तक पहुँचा रहे थे.”

हुदहुद को ढूँढने में वनराज को कोई कठिनाई न हुई. पेड़ पर उसके ठोकर मारने की आवाज़ दूर-दूर तक सुनाई दे रही थी. “यह बताओ कि तुम इस तरह पेड़ों पर लगातार ठोकर क्यों मारते रहते हो?” शेर ने पूछा.

हुदहुद ने झट से कहा, “महाराज, काला गुबरैला जंगल में सारे रास्ते पर गोबर गिराता रहता है. इसके पहले कि उस गंदे मल से हम सब बीमार हो जायें, उसे रोकना होगा. दूसरों को सचेत करने के लिए मैं पेड़ पर ठोकर मारता हूँ.”

“यह गंभीर समस्या है!” वनराज ने कहा. “मैं अभी काले गुबरैले को ढूँढ़ता हूँ.”

काला, मोटा गुबरैला, जो चमकदार तांबे समान चमक रहा था, गोबर के गंदे गोलों को लुढ़काने में व्यस्त था. जब वनराज उसके पास आया, गुबरैला रुक गया और उसने विनम्रता से समझाया, “भैंस अकसर इस रास्ते पर आती-जाती है और अपने गोबर के ढेर रास्ते पर गिराती जाती है. रास्ते को साफ़ कर, मैं सिर्फ अपना कर्तव्य निभा रहा हूँ.”

इन सारी शिकायतों से ऊब कर वनराज अपने घर की ओर चल दिया. जाने से पहले उसने काले गुबरैले को आदेश दिया, “जैसे ही भैंस तुम्हें दिखाई दे उसे मेरे पास आने को कहना.”

अपनी बात कहने हेतु भैंस झटपट वनराज के घर आई. “जंगल का कोई प्राणी मेरे काम का महत्व नहीं समझता. वर्षा जंगल के रास्ते पर बड़े-बड़े गड्ढे बना देती है. उन गड्ढों को भरने के लिए ही मैं गोबर के ढेर गिराती हूँ, ताकि सब आसानी से रास्ते पर आ-जा सकें.”

शेर इतनी ज़ोर से दहाड़ा कि सारा जंगल कांप गया. न समाप्त होने वाली इन शिकायतों से शेर तंग आ चुका था, पर वह हार मानने को तैयार न था. उसने वर्षा से बात करने का सोचा. वह गुनुंग बटुर की ओर चल पड़ा. वह एक ऊँचा पहाड़ था जहाँ वर्षा बहुत निकट थी.

जब शेर पहाड़ पर धीरे-धीरे चढ़ रहा था, घने बादल इकट्ठे हो गये. तेज़ हवा के चलने के कारण ऊपर जाना कठिन होता जा रहा था. जब वह गुनुंग बटुर की सबसे ऊंची छोटी पर पहुँच गया, तो उसने दहाड़ कर कहा, “वर्षा, तुम जंगल के रास्ते क्यों बर्बाद करती हो, जिससे जानवरों को चलने में दिक्कत होती ही?”

वर्षा के उत्तर की प्रतीक्षा करते हुए, शेर थक कर ज़मीन पर बैठ गया. उसने बाली द्वीप की ओर देखा. उसने झिलमिलाती नदियाँ, नीले आकाश में टहलते हुए बादल और दूर तक फैली हरी-भरी पहाड़ियाँ देखीं. वर्षा की बूँदें गिरने लगीं और उसके थके हुए बदन में ऊर्जा भरने लगीं और सारे जंगल को नवजीवन देने लगीं. शीतल हवा ने उसकी सारी चिंताएं मिटा दीं.

वनराज को तब अहसास हुआ की उसने मूर्खतापूर्ण प्रश्न किया था. वहां विश्राम करते हुए वह द्वीप की सुन्दरता को निहारता रहा. उसने उन सब के बारे में विचार किया जिन के लिए वर्षा हितकारी थी, चाहे वह रंग-बिरंगे पक्षी हों या शक्तिशाली जानवर या छोटे मच्छर. वनराज मुस्कराया और घर की ओर चल दिया. रास्ते में जो कुछ भी दिखा उसका वह आनंद लेता रहा.

घर पहुँच कर शेर ने छिपकली और उन सब को बुलाया जिन्होंने शिकायत की थी. वनराज ने कठोरता से कहा, “वर्षा के जो लाभ हैं उनके बारे में सोचो; कल-कल करती नदियाँ, जंगल के पेड़-पौधे और जो खाना हम खाते हैं सब कुछ वर्षा की देन है.

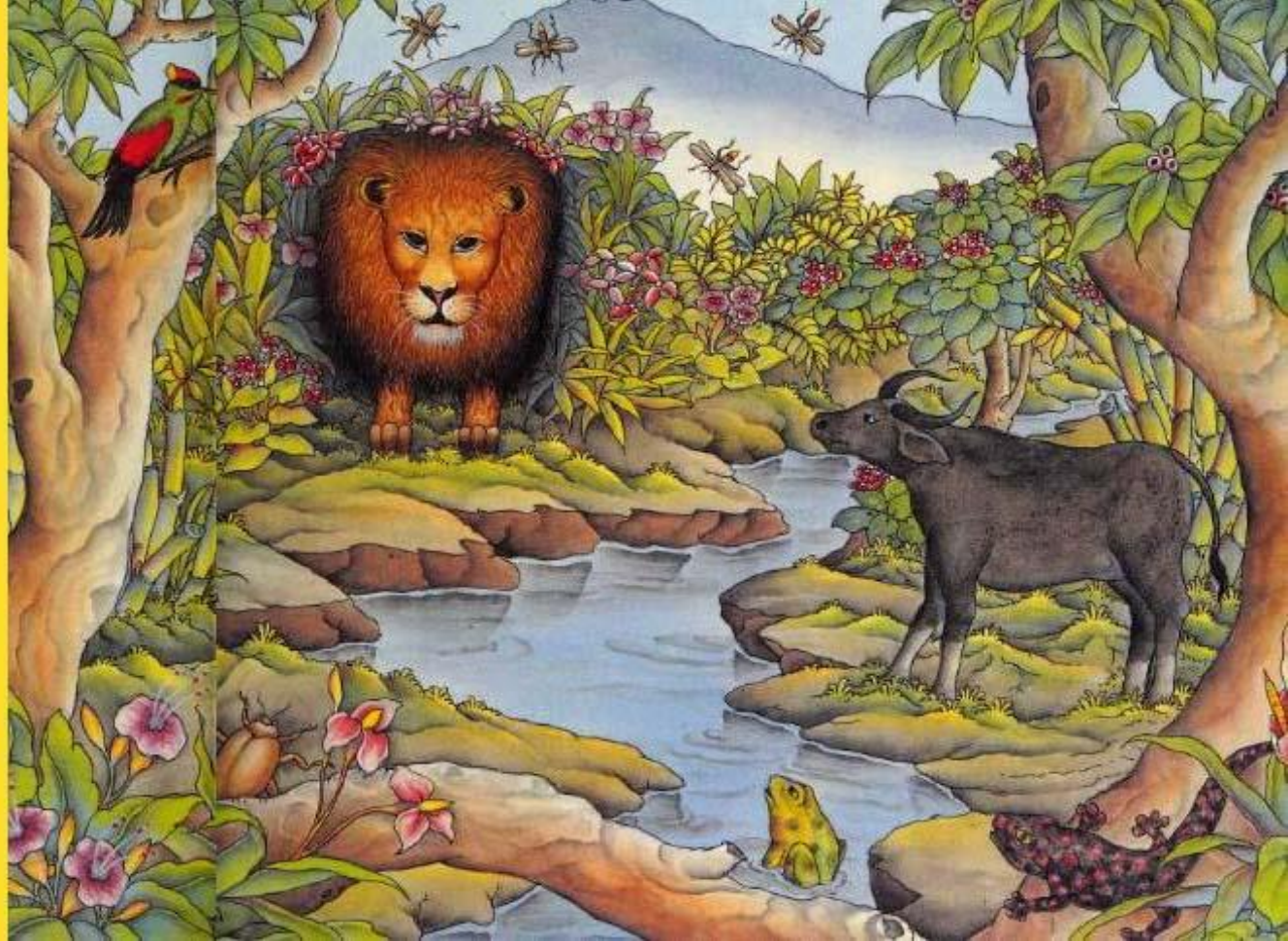

“और छिपकली, मैं तुम्हें याद दिला दूँ कि वर्षा के बिना कोई कीट न होंगे और कीटों के बिना तुम भूखी रहोगी और दुःखी हो जाओगे.”

अपनी शक्तिशाली आवाज़ में वनराज ने आदेश दिया, “शिकायत करना बंद करो! घर जाओ और एक दूसरे के साथ प्यार से रहो!”

बाली द्वीप के सब जानवरों ने यही किया.

अब हुदहुद इस बात का ध्यान रखता है कि छिपकली के पेड़ पर ठोकर न मारे. जुगनू अब भी संध्या के आकाश को जगमगाते हैं लेकिन छिपकली के अधिक निकट नहीं आते. और छिपकली दिन-प्रतिदिन मोटी होती जा रही है, अब शिकायत करने का कोई कारण उसके पास नहीं है.